International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-10-2025, Accepted: 26-11-2025, Published: 11-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 125-129

मॉरिशस में प्रवासी गिरमिटिया मज़दूरों की यात्रा: ऐतिहासिक संदर्भ

ज्योति झा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
भारतीय प्रवासी समुदाय दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय हैं। भारतीय प्रवासी दुनिया के लगभग सभी कोनों में स्थित है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारतीय, व्यापारी, धार्मिक प्रचारकों, गिरमिटिया मज़दूरों, आधुनिक पेशेवर आदि के रूप में दुनिया के कई हिस्सों में गए। यूरोपीय उपनिवेशवाद की अवधि के दौरान बड़ी संख्या में भारतीयों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में ले जाया गया। उपनिवेशों में काम करने के लिए उपनिवेश वादियों द्वारा गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में इन्हें ले जाया गया था. बड़ी संख्या में भारतीय लोग 'गिरमिटिया प्रणाली' के तहत मॉरीशस चले गए। जिन भारतीयों ने समझौते पर हस्ताक्षर किए वह समझौता भारतीयों के लिए गिरमिट बन गया और जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किए वे गिरमिटिया बन गए | मॉरीशस में भारतीय प्रवासियों ने अपनी पैतृक संस्कृ ति और भाषाओं को संरक्षित रखा, अपनी मातृभूमि के साथ संबंध बनाए रखा है। उन्होंने अपनी पैतृक भारतीय संस्कृति, भाषा और पहचान को बचाए रखा और मॉरीशस में समाज के व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में अपनी हिस्सेदारी निभाई। वर्तमान में मॉरीशस सरकार में भारतीय मूल के लोग अधिकाधिक संख्या में हैं।

मूल शब्दः प्रवासी संस्कृति, मातृभूमि, उपनिवेशवाद, साम्राज्य, राष्ट्रमंडल, आकर्षण, परंपरा, प्रतिस्पर्धा, पलायन, पौराणिक और प्रतिनिधित्व

प्रस्तावना
भारत में प्रवास कोई नई घटना नहीं है, प्राचीन काल से ही भारतीय लोग विभिन्न देशों के साथ व्यापार ,धर्म और राजनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए दुनिया भर में प्रवास करते रहे है। भारत से प्रवास की प्रवृत्ति सम्राट अशोक [268–232 ईसा पूर्व] के काल से चली आ रही है, जब उन्होंने भगवान बुद्ध द्वारा दिये गए शांति के संदेश को फैलाने के लिए दुनिया भर में दूत भेजे थे। पौराणिक कथाओं में भी पांडवों का प्रवास, श्री राम जी का प्रवास आदि कथाओं के बारे में भी सुनने को मिलता है। हालांकि, ब्रिटिश शासन के दौरान भारत से नियमित प्रवास गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में शुरू हुआ | भारतीय, गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में दक्षिण अफ्रीका, फिजी, मॉरीशस, सीलोन, सूरीनाम, ब्रिटिश गुयाना और मलेशिया गए | वर्तमान में, भारतीय प्रवासी दुनिया में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय हैं। मॉरीशस एक बहु सांस्कृतिक, बहुभाषी और बहु जातीय देश बन गया है। मॉरीशस में भारतीय बहुसंख्यक हैं। उन्होंने अपने समाज को भारतीय समाज के रूप में ही बसाया है। मॉरीशस में भारतीय भाषाओं का अच्छा स्थान है। भारत सरकार भी मॉरीशस में भारतीय भाषाओं और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कुछ सहायता प्रदान करती है। ताकि वहाँ रह रहे भारतीय भी अपनी संस्कृति को और समृद्ध कर सके।

ब्रिटिश सरकार ने जब अपने पूरे साम्राज्य में दास प्रथा को समाप्त कर दिया. तब दास मजदूरों की जगह भारतीय मज़दूरों को शर्तबंदी प्रथा के तहत बागानों और खदानों में काम करने के लिए नियुक्त किया। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का पहला समूह चीनी बागानों में काम करने के लिए मॉरीशस गया। इसके बाद चाय, गन्ना, रबड़ और ताड़ के बागानों और खदानों में काम करने के लिए और अधिक भारतीय मज़दूरों को ठेके पर भर्ती किया गया। जब भारतीय मॉरीशस आए तो वे बहुत ही कठिन परिस्थितियों में रहे थे। भारतीय लोग ठेके पर प्रवास करते थे जिसे एग्रीमेंट या समझौता कहा जाता था. लेकिन भारतीय इसका उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते थे जिस कारण एग्रीमेंट, गिरमिट बन गया और समझौते के तहत प्रवास करने वाले व्यक्ति गिरमिटिया कहलाए जाने लगे। 1834 में, 36 भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरीशस गए, यह भारत से पलायन की शुरुआत थी जो 1920 तक जारी रही। 1834 से 1920 तक, लगभग 453000 भारतीय गिरमिटिया प्रथा के तहत मॉरीशस गए। ब्रिटिश सरकार इस उपनिवेश को एक आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित करना चाहती थी। इसलिए उन्होंने भारतीय मज़दूरों को आयात किया। क्योंकि भारतीय लोग मेहनती होते हैं और काम की शर्तों के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं।

मॉरीशस
मॉरीशस, हिंद महासागर में मेडागास्कर से लगभग 800 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। व्यापारिक कॉल में यूरोपीय लोग व्यापारिक मार्गों और बाजारों की खोज करते थे। मॉरीशस द्वीप का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यापारिक मार्ग पर हिंद महासागर में स्थित है। यह स्थान दक्षिण एशिया से यूरोप जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर स्थित है। "400 वर्ष पूर्व लगभग ईसाई शताब्दी 1505 और 1507 के बीच में डाम पेद्रो नामक पुर्तगीज मनुष्य को इस टापू का पता लगा"[1]। इनके पास यह द्वीप 75 वर्ष से ज्यादा नहीं रहा। इसके बाद, डचो ने इस द्वीप पर कब्जा कर लिया।" ये लोग भी हिंदुस्तान के साथ व्यापार करते थे. सुप्रसिद्ध जावा टापू इनके अधिकार में था. हिंदुस्तान से लौटते समय उनके जहाजों को अफ्रीका के केप ऑफ गुडहोप के पास बड़े तूफान का सामना करना पड़ा. जहाज तितर – बितर हो गए। उनमें से तीन जहाज दरिया की लहरें खाते और घूमते – घामते वे मॉरीशस के किनारे तक आ पहुंचे"[2] इन्होंने यहाँ किसी मनुष्य की बस्ती न देख करके यहाँ अधिकार कर लिया और हॉलैंड देश के एक राजपुत्र के नाम पर इस द्वीप का नाम 'मोरिस' रख दिया. डचों ने लगभग 100 साल तक इस टापू पर अपना अधिकार जमाए रखा. मगर टापू पर इस अवधि में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई न वहाँ खेती हो सकी, न वहाँ व्यापार और वाणिज्य की उन्नति हो सकी और वे अन्य किसी तरह से इस टापू को आबाद भी नहीं कर सके. "अंत में कोई उपाय न देखकर लाचारी से टापू को अंतिम सलाम करके ये यहाँ से चले गए. केवल 10,15 आदमी जो बीमार थे और जा नहीं सकते थे। वहीं निरुपायवस पीछे रह गए. प्रयाण के समय टापू में जो कुछ कीमती और उपयोगी वस्तुएं थीं. उनको इन्होंने नाश कर डाला. उत्तम प्रकार के तमाम लकड़ी के वृक्ष काटकर जंगल को मैदान बना दिया.

घर–द्वारा, खेती–बाड़ी, पशु–पक्षी, फल–फूल, आदि समस्त चीजों को नष्ट कर दिया। ताकि दूसरी जाति टापू से कुछ भी लाभ न उठा सके"[3]। फ्रांसीसियों ने 1715 में इस द्वीप पर कब्जा कर लिया। "डच लोगों के जाने के पीछे 5 साल तक टापू खाली ही पड़ा रहा। उस समय बूरबोन में फ्रेंच लोगों का अधिकार था। उनको यह समाचार मिलते ही 'शासेर' नामी जहाज के कप्तान जेफ्रीन ने फ्रांस देश के राजा के नाम से मॉरिस टापू पर कब्जा कर लिया और उसको 'फ्रांस का टापू' नाम दिया"[4] इन्होंने इसका नाम बदलकर 'इले डी फ्रांस' कर दिया साथ ही उन्होंने लगभग 100 वर्षों तक द्वीप को अपने नियंत्रण में रखा. बाद में भारतीयों की मदद से अंग्रेजों ने मॉरीशस पर अधिकार कर लिया और स्वतंत्रता मिलने तक शासन किया। 1968 में विउपनिवेशीकरण के साथ मॉरीशस स्वतंत्र हुआ। इसके बाद इसने नए राष्ट्रमंडल की सदस्यता स्वीकार कर ली। मार्च 1992 से, यह नए राष्ट्रमंडल के भीतर एक गणतंत्र देश है। इसे 10,00,000 से अधिक व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है, जो जातीय, सामाजिक मामलों और धार्मिक अनुष्ठानों के संबंध में काफी भिन्न है। मॉरीशस दुनिया का एक बहु जातीय देश है। "वर्ल्ड फैक्टबुक 2020 के अनुसार, मॉरीशस की जनसंख्या 13,79,365 है"[5]।

ऐसा माना जाता है कि "दरियाई लुटेरे अरबों को इस टापू की खबर थी, दरिया में लूटमार करके लूट का माल वह इस जगह छिपाते थे. उन्होंने इस टापू को 'दीना मगरवी' नाम दिया था"[6]। हालांकि, सोलहवीं शताब्दी तक यह द्वीप निर्जन था। पुर्तगालियों ने 1505 मैं इस द्वीप की खोज की और पहला स्थायी समझौता स्थापित किया। मॉरीशस का इतिहास पुर्तगालियों के बसने से शुरू हुआ। यह द्वीप व्यापार मार्ग पर स्थित था, जो यूरोपीय व्यापारियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए यूरोपीय लोगों ने द्वीप को नियंत्रित करने के लिए एक दूसरे से लड़ाई लड़ी। उदाहरण के लिए 1505 मैं पुर्तगालियों के बसने से 1810 तक आज के मॉरीशस की रचना यूरोपीय उपनिवेशों ने की है, लेकिन इस द्वीप का नाम डच लोगो ने "मॉरिटस वैन नासाउ" के सम्मान में रखा था। पुर्तगालियों के आगमन ने एक महत्वपूर्ण युग की शुरुआत की जिसके कारण यूरोपीय विकास और एशिया के लिए वाणिज्यिक व्यापार मार्ग का विकास हुआ। यूरोपीय उपनिवेश वादियों ने द्वीप पर कब्जा करने और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण करने की होड़ के माध्यम से मॉरीशस के इतिहास की रचना की। मुख्यतः, मॉरीशस की भौगोलिक स्थिति उपनिवेशवादियों के लिये अत्यंत लाभकारी रही है। इसलिए, यह यूरोपीय लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया और उन्होंने इसका उपयोग व्यापारिक बंदरगाह के साथ–साथ कच्चा माल प्राप्त करने के लिए भी करना शुरू कर दिया। यूरोपीय लोगों के बीच एक प्रतिस्पर्धा थी। क्योंकि हर कोई अधिक व्यापार करना और अधिक लाभ कमाना चाहता था। "1810 में अंग्रेज 70 जहाजों, 10,000 समूहों और बल के साथ मॉरीशस पहुंचे"[7]। अंग्रेजों ने द्वीप के मूल नाम 'मॉरीशस' को बहाल करना जारी रखा, जो डच द्वारा दिया गया था। यह आंशिक रूप से एक साधारण अधिग्रहण था। क्योंकि ब्रिटेन पहली औपनिवेशक शक्ति थी जिसने वस्तुतः हिन्द महासागर को नियंत्रित किया था। उस समय से अंग्रेजों का शासन शुरू हुआ। हालांकि, उन्होंने द्वीप में रहने के लिए फ्रांसीसी लोगों को बसने की अनुमति दी। हिल्स के अनुसार, "इस बात की पुष्टि हुई कि फ्रांसीसी तीर्थयात्रियों को अपनी परंपराओं, भाषा, धर्म और संपत्ति को संरक्षित करने की अनुमति होगी"[8]। अंग्रेजों की उदारता के कारण, आज फ्रांसीसी लोग विलासिता का जीवन जी रहे है। 1833 में, हाउस ऑफ कॉमन्स द्वारा दासता उन्मूलन अधिनियम पारित किया गया। "सन 1834 ईस्वी में गुलाम गिरी की प्रथा बंद हो जाने पर मोजाम्बिक आदि गुलामों ने खेती पर काम करना बिल्कुल ही छोड़ दिया उनको 7 साल की मुद्दत उम्मीदवार के तौर पर दी गई थी. उसके समाप्त होते ही उनमें एक प्रकार का नव जीवन संचार हो गया गुलामों ने यही मान लिया कि खेती और गुलामी एक ही वस्तु है"[9]। इस अधिनियम के अनुसार मॉरीशस में 66,000 दास मुक्त हो गए। दास आमतौर पर वहाँ रहने और काम करने के लिए तैयार नहीं थे, जब अफ्रीकी गुलाम आजाद हुए तो उन्होंने गन्ने के बागानों में काम करने से इनकार कर दिया। "टापू के जमींदारों के सामने अब यहाँ बड़ा सवाल उपस्थित था कि हमारी खेती पर काम करने के लिए अब द्विपाद बेल कहाँ से मिलेंगे. संसार के जिस जिस देश में मेहनत और कष्ट करके जंगल में मंगल बनाने की आवश्यकता पड़ी है। वहाँ वहाँ ही हिंदी कुलियों ने अपना पसीना ही नहीं बल्कि खून बहाया है और उस स्थान को स्वर्ण भूमि बना दिया है"[10]. इस प्रकार बिहार और भारत के अन्य वंचित क्षेत्रों से हिंदू और मुस्लिम दोनों तरह के गिरमिटिया मज़दूरों को मॉरीशस लाया गया। लगभग "1834 से 1910 के बीच 4,50,000 भारतीय गिरमिटिया मजदूर मॉरीशस पहुंचे। हालांकि, लगभग 33% गिरमिटिया मजदूर अनुबंध की समाप्ति के बाद भारत लौट आए। लगभग 67% भारतीय गिरमिटिया लोग वहाँ स्थायी रूप से बस गये"[11]। यह बसना इतना आसान नहीं था. क्योंकि यहाँ यूरोपीय लोग अपनी सभ्यता और संस्कृति, धार्मिक आचार विचारों को बजाए और बनाए रखना चाहते थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके समानांतर यहाँ और कोई भी सभ्यता और संस्कृति अपना अस्तित्व बना सके. इन विपरीत परिस्थितियों में भी भारतीयों ने विभिन्न प्रकार के शोषण, अत्याचार और कष्टों को सहकर अपनी सभ्यता, संस्कृ ति और धार्मिक मूल्यों को बचाए और बनाए रखा।

मॉरीशस में भारतीय प्रवासी

आधिकारिक तौर पर, दास प्रथा को सबसे पहले ब्रिटिश सरकार ने 1834 में अंग्रेजी उपनिवेशों में समाप्त किया था। उसके बाद इसे फ्रांसीसी [1846] और डच [1873] उपनिवेशों में समाप्त किया गया। दास प्रथा के समाप्त होने के पश्चात् मानव श्रम की कमी महसूस होने लगी। कृषि बागानों में मज़दूरों की कमी ने अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। बड़ी संख्या में भारतीयों को गिरमिटिया मजदूर के रूप में शामिल किया गया और विभिन्न उपनिवेशों में भेजा गया। "हिंदुस्तान में मेहनती शांत और गरीब कुलियों का लाकूप हमेशा ही तैयार रहती है। जो चाहे वह उसे काट ले जाए, उनको मारो, पीटो, खाना दो, न दो, बिचारे रोते–पीटते भी तुम्हारा काम करते ही रहेंगे. यदि उन पर कोई बहुत ही जबरदस्ती करें तो वह अपना किस्मत को दोष देंगे और 'भगवान की इच्छा' कहकर फिर पूर्ववत मरते ही रहेंगे"[12] ब्रिटिश भारतीय उपनिवेश से यह जानते थे कि भारतीय किसान गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त है। इन्हें इसकी जानकारी भी है और ये मेहनती भी हैं। इसी कारण से भारतीय मज़दूरों और किसानों को बड़े पैमाने पर अंग्रेजों ने मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, ब्रिटिश गुयाना आदि अपने उपनिवेशों में भेजा।

भारत समग्र प्रवास में सबसे बड़ा योगदान देने वाले देशों में से एक है। "भारत चीन के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय का योगदान देता है। लगभग 30 मिलियन भारतीय देश के बाहर रह रहे है"[13]। इसमें से बड़ा हिस्सा गिरमिटिया मज़दूरों का हैं जो आजादी से पहले पलायन कर गए थे। उन्हें भारतीय मूल के व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। आजादी के बाद से भारत ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कुशल, अर्ध कुशल और अकुशल श्रमिकों के रूप में विश्वव्यापी प्रवासन में योगदान दिया है। "सन 1810 में अंग्रेजी सत्ता मॉरीशस में स्थापित हो जाने के बाद प्रथम गवर्नर फरकुहार ने हिंदुस्तान से 835 कैदियों को कम करने के लिए यहाँ मंगवाया था. जिनमें छह औरतें भी थीं"[14] उन्होंने इन कैदियों को मॉरिशस में मुख्य सड़कों के निर्माण में लगाया था. कुछ भारतीय कैदियों ने डाकघर विभाग में काम किया था। इसने गिरमिटिया प्रथा का रास्ता साफ कर दिया।

साथ ही, गिरमिटिया प्रथा को गुलामी के एक नए रूप के रूप में विकसित किया गया। भारतीय समाज में, पवित्र हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार, समुद्र पार करना ईश निंदा माना जाता था। इस बंधन के बावजूद, बड़े पैमाने पर प्रवास के कारण लगभग दो करोड़ लोग 70 देशों में बस गए। भारत के उपनिवेशीकरण ने नए प्रवास के अवसरों के रास्ते खोले और बाद में भारतीयों को इसका लाभ मिला।

ब्रिटिश शासन के दौरान बड़ी संख्या में भारतीय ब्रिटिश उपनिवेशों में गिरमिटिया मजदूर के रूप में प्रवास करते थे। ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशों में दास प्रथा के उन्मूलन की घोषणा की। इस घोषणा के कारण, कई उपनिवेशों में श्रमिकों की भारी कमी हो गयी। मॉरीशस में एक प्रकार के प्रयोग के रूप में गिरमिटिया प्रथा की शुरुआत की गई, जो बहुत सफल रही और बाद में अन्य उपनिवेशों में भी लागू की गई। मॉरीशस मैं जो भारतीय गिरमिटिया मजदूर के रूप में गए उन्होंने अपनी संस्कृति, सामाजिक प्रथाओं, धार्मिक विश्वास आदि को संरक्षित रखा। भारतीय प्रवासियों ने अपनी धार्मिक पहचान जैसे हिंदू धर्म, इस्लाम, सिख धर्म और ईसाई धर्म को बनाए रखा और अपनी संस्कृति, विश्वास, भाषा और सभी पारंपरिक प्रथाओं का पालन किया। अपने मिश्रित संस्कृति पहचान के साथ उन्होंने दुनिया में मॉरीशस की पहचान बनाई।

आधुनिक मॉरीशस में भारतीय संस्कृति

प्रवास काल के दौरान भारतीय लोग अपनी संस्कृति, परंपराओं, धर्मों, भाषाओं, विश्वासों और जातियों के साथ मॉरीशस आए। वे अपने साथ भारतीय संस्कृति, खान–पान, रीति–रिवाज और परंपराएं भी ले गए। वर्तमान में वे अपनी पैतृक संस्कृति का पालन कर रहे हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों से भारतीय अपनी अलग–अलग परम्पराओं और धर्मों के साथ मॉरीशस आए, लेकिन मॉरीशस में उन्हें एक ही तरह की समस्याओं और अनुभवों का सामना करना पड़ा। भारतीय मॉरीशस वासी वर्तमान में उसी भारतीय संस्कृति का पालन कर रहे हैं। गिरमिटिया मज़दूरों के प्रवास के कारण मॉरीशस एक बहु सांस्कृतिक बहुभाषी और बहु जातीय देश बन गया।

अधिकांश "प्रवासी बॉम्बे, बिहार, मद्रास और भारत के उत्तर पश्चिमी प्रांतों से मॉरीशस आ रहे थे। वे विष्णु, कृष्ण, शिव जैसे कई देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। और अन्य पौराणिक अनुष्ठान करते हैं, हालांकि भारतीय हिंदू परम्परा के अनुसार समुद्र पार करने वाला व्यक्ति अपनी पहचान खोने का विषय बन जाता है, फिर भी गिरमिटिया मज़दूरों ने अपनी भारतीय पहचान को बनाए रखना शुरू कर दिया"[15]। गिरमिटिया काल के दौरान विभिन्न संस्कृति और सामाजिक स्थिति वाले लोग एक ही गांव में एक साथ रहते थे और गन्ने के खेतों में एक साथ काम करते थे। इसलिए यह कहा जाता है कि उनके बीच कोई सांस्कृतिक या सामाजिक सीमाएं नहीं थी। वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति मॉरीशस में प्रमुख संस्कृति है। यहाँ भारतीय मूल के लोगों की विवाह पद्धति है, जो आंशिक रूप से भारत जैसी है। आम तौर पर अरेंज विवाह समान समूहों और वर्गों में होते थे। वर्तमान समय में हिंदू महिलाएं मॉरीशस में माथे पर सिंदूर लगाती है और शहरों की विवाहित महिलाएं अपने बालों के एक हिस्से में सिंदूर लगाती है।

वर्तमान परिदृश्य में, मॉरीशस में भारतीय मूल के लोगों की सबसे बड़ी आबादी है, जो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का पालन करते हैं। भारतीय मॉरीशस वासी, भारतीय संस्कृति के साथ–साथ मॉरीशस की जीवनशैली का भी पालन करते हैं। भारतीय मूल के लोग अफ्रीकी, चीनी और फ्रांसीसी जैसे अन्य जातीय समूहों के साथ आंशिक रूप से घुल मिल जाते हैं, इसके अलावा वे उनके सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने का प्रयास करते हैं। जैसा कि एरिक्सन ने कहा था, "इसका मतलब यह नहीं है कि चार या उससे अधिक पीढ़ियों पहले अधिकांश गिरमिटिया मज़दूरों के आने के बाद से कोई सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं हुआ है या बहुत कम हुआ है। प्रवास काल के दौरान, भारतीय अपने साथ वर्ण और जाति व्यवस्था साथ लाए। भर्ती के समय ब्रिटिश क्लर्क के द्वारा लिखे गए अनुबंध, भारतीय नामों और जाति के नामों से परिचित नहीं थे। भर्ती करने वालों ने इंदु, मराठा, तेलिंगा, तेलुगु, मालाबार, मुस्लिम जैसी जातियों के नाम अस्पष्ट लिखें। इसलिए वे अक्सर जाति से अधिक क्षेत्रीय पहचान का प्रतिनिधित्व करते थे"[16]। भारतीयों में कई जातियां और उप जातियां मौजूद थीं। प्रवासियों के जातिगत संबंधों का पता लगाना बहुत मुश्किल है। अधिकांश प्रवासी मध्यम और निम्न जाति समूहों से थे। भारतीय सामाजिक संरचना के कारण निम्न जाति के लोगों को अछूत माना जाता था। उन्हें शिक्षा और संपत्ति का अधिकार नहीं था। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी, जो प्रवास का कारण बनी। इस प्रकार निम्न जाति के लोगों ने इस अत्याचारी स्थिति से बचने के लिए अन्य उपाय खोजने शुरू कर दिए। यात्रा के दौरान गिरमिटिया मजदूर अपने स्पर्श और आहार की शुद्धता को बनाए नहीं रख पाते थे। इस प्रकार शुद्धता की धारणा कुछ हद तक अस्थिर रही। प्रवास के कारण जाति और अस्पृश्यता प्रबल हो गई। गिरमिटिया मज़दूरों की एक बड़ी संख्या मध्यम और निम्न जातियों से संबंधित है। मॉरीशस में वे अपनी जातिगत पहचान बनाए रखते हैं, लेकिन यह भारत जैसा नहीं है। गिरमिटिया प्रथा के माध्यम से जाति व्यवस्था को बनाए रखना बहुत कठिन था। भारतीय लोग अपनी जातिगत भिन्नताओं और पदानुक्रम को बनाए नहीं रख सकते थे। वर्तमान में, अनुच्छेद 3 के दूसरे अध्याय धारा 16 के अंतर्गत 'भेदभाव से संरक्षण' में यह उल्लेख किया गया है "मॉरीशस के संविधान में यह उल्लेख है कि नस्ल, लिंग, जाति, मूल स्थान, राजनीतिक विचारों, रंग या पंथ के आधार पर लोगों के बीच कोई भेदभाव नहीं है"[17]।

हालांकि, मॉरीशस में राजनेताओं ने राजनीतिक लाभ के लिए जाति व्यवस्था का उपयोग किया। राजनेताओं ने राजनीतिक उद्देश्य के लिए जाति व्यवस्था को जारी रखने की कोशिश की. उनके अनुसार इसे राजनीतिक लाभ के लिए जारी रखा जाना चाहिए। 'वैश्य मुक्ति संघ', 'गहलोत राजपूत महासभा', 'आर्य रवि वेद प्रचारिणी सभा' जैसे कुछ अलग संगठन अपनी पहचान बनाए रखने के लिए काम कर रहे हैं। "ये जाति की आबादी राज्य के संसाधनों के अपने हिस्से के लिए सौदेबाजी करने वाले महत्वपूर्ण हित समूहों के रूप में उभरी है, जो राजनीतिक संरक्षण के माध्यम से वितरित किए जाते है।"[18] अब मॉरीशस में राजनेता अच्छी तरह से जानते हैं कि जाति के आधार पर लोगों को कैसे विभाजित किया जाए और चुनाव में लाभ कैसे प्राप्त किया जाए। भारतीय अपनी जाति लेकर मॉरीशस चले गए और वर्तमान परिदृश्य में भारतीय मूल के लोग अभी भी जाति की पहचान का पालन कर रहे हैं।

भारत और मॉरीशस दो देश हैं, लेकिन जातीय रूप से समान है। उन्होंने तीसरी दुनिया के साथ गुट निरपेक्षता स्थापित की। वे अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के लिए समान विचारधारा को स्वीकार करते हैं। इनकी विविध जातीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौतिक विशेषताओं में आश्चर्यजनक समानताएँ हैं। भारतीय मूल के लोग बहुसंख्यक हैं, इसलिए उन्होंने मॉरीशस में सत्ता को नियंत्रित किया। इसलिए इसे 'छोटा भारत' कहा जाता है। मॉरीशस वासियों का भारत से भावनात्मक लगाव है। दोनों देश बहु–नस्लीय, बहुभाषी और हिंदी भाषी लोग हैं, जो आबादी का बड़ा हिस्सा है, यहाँ कई त्यौहार मनाये जाते हैं। जैसे राम नवमी, होली, दशहरा, दीवाली, ईदुल फ़ितर, तजिया आदि बड़े उत्साह और खुशी के साथ यहाँ मनाया जाता है। भारत ने मॉरीशस के

स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग दिया। क्योंकि मॉरीशस में भारतीय मूल के लोग बहुतायत में है। जिसके परिणामस्वरूप 1968 में मॉरीशस स्वतंत्र हुआ।

एक लघु भारत के रूप में मॉरिशस

मॉरीशस एक बहु सांस्कृतिक देश और बहु धार्मिक समाज है जो शांति से एक साथ रहते हैं। विभिन्न राष्ट्रीय समुदाय अपनी संस्कृति और मूल्यों को साझा करते हैं जैसे भारतीय, अफ्रीकी, यूरोपीय और चीनी। मॉरीशस के लोग विभिन्न त्योहारों में भाग लेते हैं और मानते हैं। अन्य लोगों के साथ अच्छे संबंध रखते हैं। यह इंडो–मॉरीशस संस्कृति की एक अनूठी विशेषता है। मॉरीशस में विभिन्न भारतीय समुदाय एक साथ रहते हैं और अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई, क्षेत्रीय और धार्मिक पहचान रखते हैं। इसलिए मॉरीशस को 'छोटा भारत' कहा जाता है। कई मंदिर ,मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे आदि भारत से बहुत मिलते जुलते हैं। यहाँ "शिव मंदिर 1867 में द्वीप के उत्तरी भाग के एक गांव में बनाया गया था, इसे "गोकुला" और 1872 में, जामा मस्जिद भी बनाई गई थी"[19]। इसके बाद भारतीय समुदाय जैसे – जैसे अपनी सांस्कृतिक जड़ों को जमाता गया। वैसे – वैसे मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों का निर्माण होता गया। इसके साथ –ही – साथ प्रत्येक भारतीय हिंदू घरों में रामचरित मानस का पाठ और हनुमान चालीसा का पाठ समय – समय पर विभिन्न अवसरों पर किया जाता है।

1920 में हिंदी भाषी अभिजात वर्ग के लोगों ने मॉरीशस को 'छोटा भारत' कहा। मॉरीशस में भारतीयों ने दिसंबर 1935 में भारतीय प्रवास की वर्षगाँठ मनाई, और उन्हें भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं का नैतिक समर्थन प्राप्त हुआ। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इस उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं भेजी। इस उत्सव के परिणामस्वरूप आर. के. बुद्धन के मार्गदर्शन में भारतीय सांस्कृतिक संघ की स्थापना हुई। मॉरीशस में ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य विस्थापित और उपनिवेशित आबादी को ब्रिटिश तौर तरीकों से जोड़ना नहीं था। परिणामस्वरूप जब 1968 में मॉरीशस स्वतंत्र हुआ, तब तक ब्रिटिश शासन के अधीन रहे लोगों के अधिकांश पारंपरिक रीति–रिवाज और आदतें अभी भी जीवित थी। आज मूलतः मॉरीशस के समाज में भारतीय वातावरण व्याप्त है। इस द्वीप पर भारतीय मूल की आबादी संख्यात्मक रूप से सबसे अधिक है, इसे आम तौर पर 'लघु भारत' कहा जाता है। भारतीय लोग अपनी पहचान भाषा के माध्यम से प्रकट करते हैं, जिनमें हिंदी, भोजपुरी, मराठी, तेलुगु और तमिल भाषाओं का दैनिक प्रयोग शामिल है। ये भारतीय पारंपरिक परिधान को विभिन्न सांस्कृतिक अवसरों और धार्मिक, सामाजिक पर्व, त्योहारों के अवसर पर पहनते हैं. हालांकि भारतीय मॉरीशस के नागरिक होने के नाते वे अन्य धर्मों और संस्कृति को मानने वालों के त्योहारों में भाग लेते हैं और सांस्कृतिक मूल्यों की विभिन्न पृष्ठभूमि को समझते हैं। मॉरीशस में भारतीय पौराणिक धार्मिक महाकाव्यों रामायण, हनुमान चालीसा आदि को पढ़ा जाता है। इस प्रकार वर्तमान समय में मॉरीशस के लोगों की भाषाओं और संस्कृतियों में मिश्रण है।

भारतीय मॉरीशस, के लोगों का भारतीय समुदायों के साथ गहरा संबंध है। वे अपनी संस्कृति, विचारों और परंपराओं का आदान प्रदान करते हैं। सभी हिंदू धार्मिक अनुष्ठान भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, गुजराती, मराठी, तेलुगू और तमिल में आयोजित किए जाते हैं, लेकिन उनका अर्थ क्रियोल भाषा में समझाया जाता है। भारतीय त्योहार जैसे राम नवमी, गणेश चतुर्थी, होली, दीवाली, ईद साथ ही में मनाए जाते हैं। यह न केवल मॉरीशस में भारतीय संस्कृति के गहरे प्रभाव को दर्शाता है, बल्कि मॉरीशस के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को भी दर्शाता है। मॉरीशस में भारतीय भोजन की विभिन्न किस्में उपलब्ध हैं, जिन्हें भारतीय मूल के लोगों ने वहाँ संरक्षित किया है। जब भारतीय लोग गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में मॉरीशस आए तो वे अपने साथ भारतीय भोजन और व्यंजनों की विविधता लेकर आये। भोजन और व्यंजनों की विविधता इसलिए अधिक थी क्योंकि वे भारत के विभिन्न हिस्सों से आए थे।

1901 में दक्षिण अफ्रीका से लौटते समय महात्मा गाँधी मॉरीशस गए। उनकी यह यात्रा भारत– मॉरीशस के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। उन्होंने भारतीय कृषकों और मज़दूरों से अपने बच्चों को स्कूल भेजने की अपील की, उन्होंने प्रवासी भारतीयों के वंशजों को राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। मॉरीशस पहला देश था जिसने 1967 में हुए जनमत संग्रह में ब्रिटिश शासन के पक्ष में 44% और स्वतंत्रता के पक्ष में 56% मत प्राप्त किए थे। 12 मार्च 1968 को मॉरीशस एक स्वतंत्र देश बना। "स्वतंत्रता के बाद, 1970 में, इंदिरा गाँधी ने मॉरीशस का दौरा किया और 'महात्मा गाँधी संस्थान' की आधारशिला रखी। उस समय इंदिरा गाँधी ने मॉरीशस को 'छोटा भारत' कहा था"[20]। क्योंकि वहाँ भारतीय मूल के लोग बहुसंख्यक थे। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने कहा था कि मॉरीशस में भारतीय संस्कृति, धर्म, जीवन मूल्य, परंपरा, रीति–रिवाज और लोक कलाओं को देखते हुए ऐसा लगता है कि एक दिन भारत को इन मूल्यों की तलाश में मॉरीशस पहुंचना पड़ सकता है। अगर यह बात सत प्रतिशत लागू ना भी हो तो भी निराधार नहीं है। हाल ही में 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मॉरीशस का दौरा किया। उन्होंने भी अपने भाषण में मॉरीशस को 'छोटा भारत' कहा. मॉरीशस के लिए इस तरह का संबोधन निश्चित रूप से भारत के संदर्भ में मॉरीशस की अहमियत और महत्व को बताता है।

निष्कर्ष

इस तरह से गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में भारतीय प्रवासियों की जो यात्रा शोषण, अत्याचार और यातनाओं से प्रारंभ हुई थी। उसकी परिणति सुखद रूप में हुई. मॉरीशस के समाज में भारतीय प्रवासियों ने अपने परिश्रम से अपनी पहचान और अस्मिता को निर्मित किया। मॉरीशस के सांस्कृतिक, राजनैतिक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय प्रवासियों ने मॉरीशस में सांस्कृतिक और राजनैतिक नेतृत्व प्रदान किया। भारत के विभिन्न प्रांतों की बोलियों और पहनावे से मॉरीशस में भारतीय संस्कृति की महानता और भी बढ़ गई है। अब तो ऐसा लगता है जैसे मॉरीशस के बगीचे में कई तरह के भारतीय फूल खिल गए हो। मॉरीशस में लगभग 70% भारतीय मूल के लोग रहते हैं। अगर इसे एक महान देश कहा जाए या 'छोटा भारत' कहा जाए तो, इसमें अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए। भारतीय मूल के लोग मॉरीशस का सबसे बड़ा जातीय समूह हैं। आजादी के बाद से उन्होंने मॉरीशस की राजनीति को नियंत्रित किया है। भारतीयों ने राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। मॉरीशस के पहले प्रधानमंत्री 'सर शिवसागर रामगुलाम' भारतीय मूल के थे और प्रधानमंत्री 'नवीन रामगुलाम' भी भारतीय मूल के हैं। मॉरीशस के इतिहास में केवल एक ही प्रधानमंत्री 'पॉल बैरेंजर' हुए जो भारतीय मूल के नहीं थे। बाकी सभी अबतक भारतीय मूल के प्रधानमंत्री रहे हैं। भारतीय मूल के लोगों, भारत और मॉरीशस के बीच बहुत मजबूत संबंध हैं। इसलिए 2014 में मॉरीशस सरकार ने घोषणा की कि मॉरीशस आने जाने के लिए भारतीयों के लिए वीजा जरूरी नहीं है। इसका मतलब है कि भारतीय लोग आसानी से मॉरीशस की यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार भारतीय प्रवासियों की सांस्कृतिक जड़ें मजबूत हुई जिससे वे अपने पारिवारिक संबंधों को आसानी से बनाए रख सकते हैं। इसके अलावा मॉरीशस में भारतीय संस्कृति वहाँ की प्रमुख और महत्वपूर्ण संस्कृतियों में से एक है।

संदर्भ

1. मॉरिशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पृष्ठ 1
2. वही. पृष्ठ 3
3. वही. पृष्ठ 6
4. वही. पृष्ठ 6
5. Africa: Mauritius — The World Factbook - Central Intelligence Agency. Cia.gov. from https://www.cia.gov/library/publications/the-world-factbook/geos/mp.html.
6. मॉरिशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पृष्ठ 1
7. Bowman LW. (2018). Mauritius|Facts, Geography & History. Retrieved February 9, 2018, from Encylopedia Britannica: https://www.britannica.com/place/Mauritius
8. History | Mauritian Archaeology. Mauritianarchaeology .sites.stanford.edu. (2020). Retrieved 13 October 2018, from https://mauritianarchaeology.sites.stanford.edu/history.
9. मॉरिशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पृष्ठ 127
10. वही. पृष्ठ 128
11. Bowman LW. (2018). Mauritius|Facts, Geography & History. Retrieved February 9, 2018, from Encylopedia Britannica: https://www.britannica.com/place/Mauritius
12. मॉरिशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पृष्ठ128
13. भारतीय डायस्पोरा: विविध आयाम, संपादन – रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय, पृष्ठ 15
14. मॉरिशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पृष्ठ 126
15. Parekh B, Singh G, Vertovec S. Culture and Economy in the Indian Diaspora, page, 2003, 87
16. मॉरीशस का संक्षिप्त इतिहास, विष्णुदयाल, पृष्ठ 45
17. The Constitution of the Republic of Mauritius. Mauritiusassembly.govmu.org. (2016). Retrieved 15 October 2018, from https://mauritiusassembly.govmu.org/English/constitution/Pages/constitution2016.pdf
18. Hazareesingh, K. (1966). The Religion and Culture of Indian Immigrants in Mauritius and the Effect of Social Change. Comparative Studies in Society and History, page 212
19. वही. पृष्ठ 246
20. Indira Gandhi called us 'Chota Bharat': Mauritius PM. Deccan Herald. (2011). Retrieved 3 November 2018, from http://www.deccanherald.com/content/157300/indira-gandhi-called-us-chota.html.